

गोलू रौ बुखार



Bangani

गोलू रौ बुखार

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

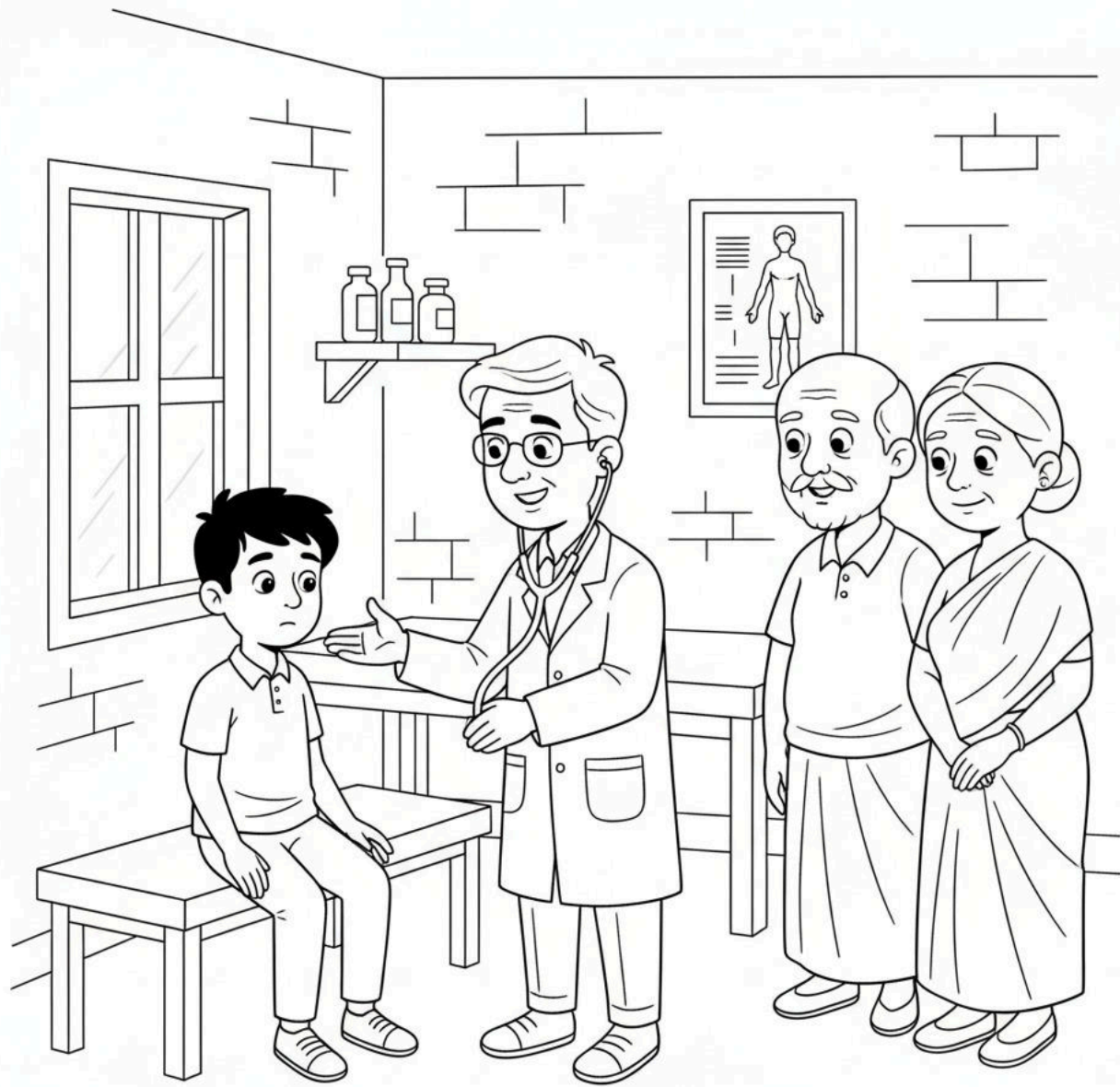
॥धन्यवाद॥



एक गाउँ दि गोलू आपडै दादा-दादी रै
साथै रौयै थौ। एक दूस जौ गोलू इस्कूल
कौइ गौरै आओ, तै तेसरी दादीएइ
देखौ कि तेस बौरी तेज बुखार रौ थौ
आन्दै लागी।



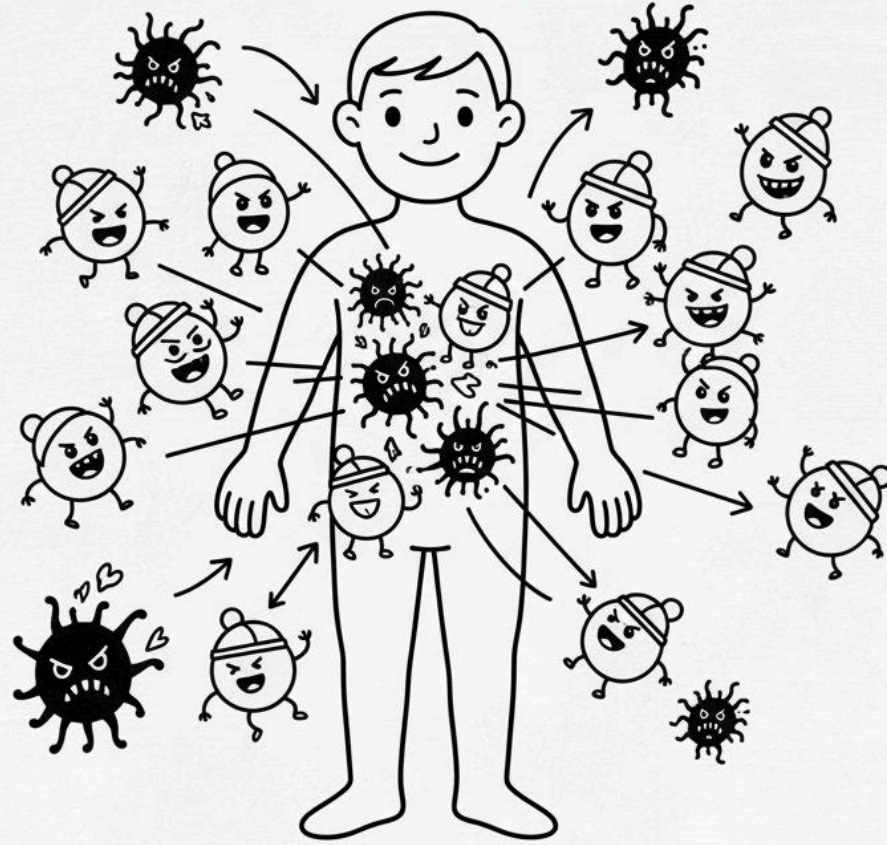
दादाइ तेसकौइ पुछौ, का पेट रौ दुखदै
लागी। गोलुइ ना कौरी, तेबै सेउ एक
काम्बल कौइ डौकुवौ, औज़ि तेसरी
तौबियेत ज़ादाइ खौराब लागी औन्दि, सेउ
काम्बलिन्दै रौ थौ लागी। तैबै दादाइ
तेसकै गुळमुळौ पाणी देणौ।



तैबै तिउं सेउ डौक्टर काइ गिणौ,
डौक्टरेइ तेसरी जाँच कौरी तैबै डौक्टरेइ
बोलौ कि गौबराओ ना नौथि, एऊ एक
खाली बुखार, आमारै शौरीर दि केत्रा
किटाणु आशैण तेसकौइ लौड़नेखि
शौरीरेइ आपड़ी गौरमी बौड़ाइ।

इमयुन सीस्टम

रोगानषयं से लढना



औज़ि एशौ बी बोलौ कि जौ आमारे शौरीर
दि कोइ वाइरस औज़ि बैक्टीरिया डैण, तै
आमारौ इम्यून सिस्टम (रोग प्रतिरोधक
क्षमता) चेतन औयै। एऊ दुश्मन कौइ
लौड़ने खी शौरीर री गौरमीएइ बौड़ा। तेसी
खी आमैं बुखार बोलिण।



तैबै डौक्टरेइ तिउंके दुवाइ देणी। औज़ि
बोलौ, कि एसकी बौक्ते बौक्ते दि ईं
दुवाइएइ देइयौ। औज़ि एस आराम देइयौ
कौरणै। औज़ि एसदि शेली पाणी री पौटी
लाइयौ ज़ेसकौइ एसरौ शौरीर शेलौ जा
लौ।



गौरकै आइयौ तेसरी दादीएइ तेशौइ कियौ
जेशौ डौक्टरेइ बोलौ थौ। औज़ि दादीएइ
तेसकै शेळौ पाणी री पौटी बी की। औज़ि
तेसखी खाणे खी थोड़ौ सुप दैऔ औज़ि
गुळमुळौ पाणी बी



दुजै दुसै गोलु री तौबियेत काफी ठीक उई
गोइ थी, औज़ि तेसरौ बुखार बी उतरी
गौऐ थै। तिणी आपड़ै दादा आरी बोलौ
दादा आउं एबै ठीक उई गोओ। औज़ि
बोलौ कि एक ईसाबै कौइ तै बुखार
आमारौ दोस्त।



दादाइ बी तेसरी मुस्कुराइयौ बोलौ कि
ओबै एशौ बोली सौकिण, केलाकि एऊ
बुखार आमु आरी बोलै कि आमारै शौरीर
ठीक औस्ति कि ना आं एज़ि बौज़ै कौइ
आमु एसरी देखबाळ कौरणी चाइं।



कुछ दूस बासियै गोलू बी पुरै ठीक उई
गोऔ थौ। तैबै सेउ इस्कूल कै बी डेन्दै
लागौ। ऐबै तिनी एशौ ज़ाणी गोऔ थी कि
बुखार कौइ डौरणे री ज़ौरूरत ना नौथि
बौल्कि एऊ आमारे शौरीरेइ चेतन
कौरै कि आमु आपड़ी सेहत री ख्याल
थौणै चाइं।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....

